अंतरा-शब्दशक्ति

जैसा खोया वैसा पाया

(बाल कहानी संग्रह)

राजेन्द्र श्रीवास्तव

जैसा खोया वैसा पाया

(बाल कहानी संग्रह)

राजेंद्र श्रीवास्तव

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-67-3

अन्तरा-शब्दशक्ति **प्रकाशन**

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९ - राजेंद्र श्रीवास्तव
मूल्य - ६०.०० रुपये
रेखाचित्रकार- रुचिता श्रीवास्तव
आवरण चित्र- रुचिता श्रीवास्तव
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Jaisa Khoya Waisa Paya by Rajendra Shrivastava

वैधानिक चेतावनी- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

नमस्कार!

प्रिय बाल वृंद को समर्पित मेरा यह पहला बाल कहानी संग्रह "जैसा खोया वैसा पाया" आपको भेंट करते हुए हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

इन कहानियों को लिखते समय यह बात हमेशा मन में रही कि कहानियाँ बालमन व उनकी रुचि के अनुरूप हों, साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति उनकी चेतना को जागृत करने व बच्चों के सर्वांगीण विकास में भी सहायक हों। तथ्यों पर आधारित वैज्ञानिक अवधारणाएं पुष्ट हों।

नकारात्मकता व उपदेशों से बचते हुए सद्-संदेश उन तक पहुँच सकें, यह प्रयास रहा है। यह भी कोशिश रही कि पढ़ने व बोलने में कठिन शब्द कहानियों में न आएँ। साथ ही नवीन व उपयोगी जानकारी रोचक ढंग से बच्चों तक पहुँच सके। स्वयं के प्रति व समाज के प्रति दायित्व बोध जाग सके, ऐसी कुछ कहानियों का भी समावेश किया है।

मंशा यही रही कि बच्चों के हित की बात, बच्चों की ही बोधगम्य भाषा में सहजता से उन तक पहुँचा सकूँ। जिन्हें न केवल वह हृदयंगम कर सकें, अपितु अच्छी बातें उनके मनोमष्तिष्क में स्थायी रूप से घर बना सकें।

इन कहानियों के चित्र मेरी छोटी बिटिया रुचिता श्रीवास्तव ने बड़ी लगन से बनायें हैं। मुझे विश्वास है कि इस विधा में उसका यह प्रयास इस पुस्तक को पूर्णता देने में व रोचक बनाने में सहायक होगा।

कहानी लेखन से लेकर पुस्तक आकार मिलने तक जिन मित्रों, मनीषियों व परिजनों का प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से सहयोग व मार्गदर्शन मैंने पाया। उन सभी के प्रति हार्दिक धन्यवाद व आभार व्यक्त करता हूँ।

इस आशा व विश्वास के साथ मैं यह पुस्तक आपको सौंप रहा हूँ कि आपके माध्यम से इसमें निहित आशय व संदेश बाल-जगत तक पहुँच सके। आपके स्नेहिल सुझाव व आत्मीय मार्गदर्शन की सदैव ही आकाँक्षा रही है।

धन्यवाद

स्नेह व आशीष आकाँक्षी
राजेंद्र श्रीवास्तव

अनुक्रमणिका

1. चतुराई काम आयी 5

2. हम कहाँ जायें? 9

3. सीख मिल गयी 12

4. मिठ्ठू का नया मित्र 14

5. जैसा खोया वैसा पाया 17

6. स्वीटी की- 'सब्जी-सेना' 21

7. पुरस्कार 24

8. भाग छोटी भाग 28

9. पौधे भूखे हैं 31

चतुराई काम आयी

एक रविवार को गुलशन और गौरव कालोनी के खुले मैदान में गिल्ली डंडा खेल रहे थे।दिसम्बर की दोपहर में सूरज भी काँपता नजर आ रहा था।

कालोनी के लोग सप्ताह भर के रुके काम निपटा रहे थे।केवल गुलशन और गौरव ही ठंड से बेखबर खेलने में मस्त थे।

तभी उन्होनें देखा कि एक अंजान आदमी गार्डियस आंटी के बंगले में प्रवेश कर रहा है। जिज्ञासु प्रवृति के दोनों मित्र भी उसकी गतिविधि गौर से देखने लगे। कुछ दिनों पहिले तक दोनों मित्र गार्डियस आंटी के घर बेरोकटोक आते-जाते रहते थे। लेकिन एक दिन क्रिकेट खेलते वक्त बॉल उनके गार्डन में चली गई और बॉल खोजने के प्रयास में आंटी का सबसे प्यारा गुलाब का पौधा गमले से उखङ गया। उस दिन गार्डियस आंटी का मूड भी उखङ गया और कहा-"आज के बाद भूलकर भी यहाँ कदम मत रखना।"

गौरव के पापा को इस घटना का पता चला तो उन्होनें बैट व बॉल छीन कर छिपा दिये। तब से दोनों गिल्ली डंडा खेलकर कुछ समय निकाल देते हैं।

इस आदमी की चालढाल से दोनों को कुछ शंका हुई। दबे पाँव वह दोनों भी गार्डियस आंटी के बंगले में प्रवेश कर गये।

"माई! बाबा को कुछ खाने को मिले।" उस आदमी ने आवाज़ लगाई। आवाज सुनकर गार्डियस आंटी बाहर आयी "क्या चाहिये बाबा।"

"रुपया-पाँच रुपया! ऊपर वाला आपकी सब इच्छा पूरी करेगा माई।"

गार्डियस आंटी अंदर गयी और पाँच रुपये का नोट लाकर उस आदमी को दे दिया।

"भगवान आपका भला करे,आप बहुत नेकदिल हैं माई।" कहते हुये उसने हाथ हवा में लहराया तो उसके हाथ में पाँच-पाँच रुपये के दो नोट आ गये।

छिपकर यह सब देख रहे गौरव व गुलशन ने यह चमत्कार देखा तो उन्हे बहुत आश्चर्य हुआ।उन नोटो को गार्डियस आंटी को दिखाते हुये उसने कहा-"माई! आज ऊपरवाला तेरे ऊपर बहुत मेहरबान है,तू जो भी जितना भी लायेगी उसका दोगुना हो जायेगा। जा ले आ....।"

"मुझे कुछ नहीं चाहिये! तुम जाओ किसी और का भला करो।" गार्डियस आंटी ने कहा।

"अविश्वास मत कर,नहीं तो अनर्थ हो जायेगा।जा माई! रुपया , गहने सिक्के जो भी हो ले आ,तेरी आँखों के सामने दस मिनट में दोगुना कर दूँगा। जल्दी कर माई,आयी लक्ष्मी को मत ठुकरा। अगर ठुकराया तो घर में तिनका भी नहीं बचेगा।"

"कहीं यह आंटी को उल्लू तो नहीं बना रहा?" गौरव ने धीमी आवाज में गुलशन से कहा।

"हाँ! आंटी को झाँसा देकर चम्पत हो जायेगा।" गुलशन ने भी धीमी आवाज में ही उत्तर दिया।

"चलो हम चल कर उनकी मदद करते हैं"

"हाँ !चलो..."।

दोनों साहस करके वहाँ पहुँच गये। वह व्यक्ति इन दोनों को वहाँ देखकर बोला- "तुम बच्चा लोग यहाँ क्या कर रहे हो? भागो यहाँ से। यहाँ तुम्हारा कोई काम नहीं है।"

उसकी बडी दाढ़ी-मूँछ व बडी-बडी आँखें देखकर दोनों सहम गये। फिर गुलशन ने साहस कर आंटी से कहा- "आंटी इसकी बातों में मत आना यह आपको मूर्ख बना रहा है।"

"हाँ! आंटी इसकी मत सुनना।" गौरव ने भी जोर देकर कहा।

बेचारी आंटी इससे पहिले कि कुछ कहती- उस व्यक्ति ने क्रोधित होकर झोली से कुछ निकाला और कुछ मंत्र बुदबुदाते हुये अपने साथ लाये कटोरे में डाल दिया। क्षण भर में ही कटोरे में आग जलने लगी।

"अब अगर तुमने चूँ-चपड़ की तो भस्म कर दूँगा,समझे..। भागो यहाँ से। " उसने दोनों को धमकाया ।

"माई तू क्या सोच रही है। तू इन शैतान बच्चों की बातों में आकर अवसर गवाँ रही है। कुछ अनर्थ हो जाय तो फिर मत कहना।" वहआवेश में कहते हुये जाने का अभिनय करने लगा।

अनिष्ट की आशंका से आंटी डर गई।

"नहीं नहीं !" आप रुकिये मैं अभी लेकर आती हूँ।". घबरा कर आंटी ने कहा।

कहीं इन बच्चों का यह कुछ अनिष्ट न कर दे, इस डर से आंटी ने दोनों को डपट कर बाहर जाने को कहा तो विवश होकर दोनों बाहर आ गये।

"अब क्या करें?" गौरव ने पूछा।

"कुछ भी हो,आंटी को इसके चंगुल से बचाना ही होगा।" गुलशन ने दृढ़ता से कहा।

"गुलशन तुम यहाँ रुककर इस पर नजर रखो। मैं शर्मा अंकल को बुलाकर लाता हूँ।"

"गुड आइडिया! उनसे कहना पुलिस को भी फोन कर दें,इसको यहाँ से पकङ कर सीधा थाना पहुँचा देते हैं।"

गौरव तेजी से शर्मा अंकल को बुलाने चल दिया।

कुछ देर बाद गुलशन ने देखा कि वह व्यक्ति चौकन्ना होकर अपनी झोली संभालते हुये जल्दी-जल्दी बाहरी गेट की ओर आ रहा है।

गुलशन ने शीघ्रता से बाहरी गेट बंद कर बाहर से सिटकनी लगा दी।

वह व्यक्ति बहुत झल्लाया और गुलशन को डराने धमकाने लगा।

"तुम्हारी धमकी से मैं नहीं डरने वाला।

रासायनिक पदार्थों की क्रिया से आग जलाना किताबों में हम पढ़ चुके हैं।"

"अरे अरे! गुस्सा क्यों करते हो। मुझे बाहर आने दो मैं तुम्हें बहुत अच्छी चीज दूँगा।"

प्रलोभन देते हुये उसने गुलशन से कहा।

"मुझे भोला मत समझो बच्चू! बस अभी पुलिस आती ही होगी। वह अच्छी चीज तुम पुलिस को ही देना।" गुलशन ने उससे कहा।

इस बीच कुछ लोग आवाज सुनकर आसपास के घरों से निकल कर वहाँ आ गये।

जब गौरव के साथ आई पुलिस ने, उस व्यक्ति को पकड़ कर उसकी झोली की तलाशी ली तो कुछ रासायनिक पदार्थों के साथ-साथ गार्डियस आंटी के घर से चुराये जेवर व नगदी भी मिले।

घर के अंदर पहुँचने पर आंटी बेहोश मिली। पानी छिङकने पर कुछ देर में उन्हे होश आ गया ।

उस ढोंगी को पुलिस पकड़ कर थाने ले गयी।

इधर शर्मा अंकल ने आन्टी को सारी घटना सुनाई। गुलशन व गौरव की बहादुरी और चतुराई पर उन्हें बहुत खुशी हुई।

अगले सप्ताह क्रिसमस पर जब दोनों आंटी के घर पहुँचे,तो आंटी ने उन्हे एक अच्छा क्रिकेट किट भेंट किया। दोनों बहुत खुश हुये। फिर आपस में इशारे से कुछ कहा और वह दोनों आंटी का हाथ पकङ कर उन्हे आंटी के ही गार्डन में ले आये।

दोनों बच्चों ने एक सुंदर गमला गार्डियस आंटी हाथ में थमा दिया। गमले में गुलाब की टहनी पर दो प्यारी गुलाब की कलियाँ मुस्करा रहीं थी।

"मैरी क्रिसमस एंड हैप्पी न्यू इयर आंटी...।"

दोनों ने एक स्वर में कहा।

"मैरी क्रिसमस मेरे बच्चो.....।" कहकर आंटी ने खुशी से दोनों को गले से लगा लिया।

उनकी आँखों में खुशी के आँसू छलक रहे थे।

दोनों बच्चों के साथ गुलाब की कलियाँ भी मुस्करा रहीं थीं।

हम कहाँ जायें

रविवार का दिन था। प्रिंसी ने नाश्ता किया। और फिर अपना मनपसंद कैमरा साथ लेकर शहर से दूर उस जगह पहुँच गयी, जहाँ से जंगल शुरु हो जाता है। यह जगह व जंगल का यह भाग प्रिंसी के लिए नया नहीं है। रविवार हो या अन्य कोई छुट्टी का दिन, प्रिंसी कभी मित्रों के साथ तो कभी अकेली ही अपनी गाड़ी लेकर यहाँ आ जाती है।

मुख्य सड़क से कुछ ही दूर इस जगह पर पक्षियों की चहचहाहट व जंगली पशुओं की आवाजें सुनाई देने लगती हैं। कभी-कभी कुछ जानवर भी आते-जाते दिख जाते हैं। घने पेड़ एक-दूसरे से बातें करते से लगते हैं। गाड़ियों के धुएं से मुक्त जंगली पुष्पों से सुंगधित यहाँ की हवा में प्रिंसी ने बार-बार लम्बी साँसे लेकर शुद्ध वायु फेफड़ों में भर ली। उसकी सारी थकान गायब हो गयी। लुभावने दृश्य उसके कैमरे में कैद होने लगे।

पेड़ों पर उछल-कूद कर रहे बंदर उत्सुकता से कुछ दूरी बना कर यह सब देखने लगे। उनमें से अधिकतर बंदर प्रिंसी को पहले भी यहाँ देख चुके थे। प्रिंसी अक्सर केला, चना आदि ला कर उन्हे खिलाती रहती है। थोड़ी ही देर में सारे बंदर उसके पास आ गये। लेकिन एक बड़े बंदर ने डरा-धमका कर सबको वहाँ से दूर कर दिया। प्रिंसी उन्हे खाने के लिये जो फल लायी थी, वह अकेला ही उसे हड़पना चाहता था।

"अपनी ताकत से कमजोर को डराना-धमकाना अच्छी बात नहीं है। जाओ आज तुम्हे भी कुछ नहीं मिलेगा।" प्रिंसी ने कहा।

प्रिंसी अब तक समझ चुकी थी,कि जानवरों के पास मनुष्य जैसा बोलने का गुण नही है। लेकिन वह मनुष्य की हर बात व हर भाव का आशय समझ लेते हैं। और अपनी बोली व हरकतों से अपनी बात कह देते हैं। बड़े बंदर ने अपना सिर और पीठ खुजलाई और रोनी सी सूरत बना कर बड़ी आशा से प्रिंसी की ओर देखने लगा। मानो कह रहा हो "इस बार माफ कर दो, अब आगे ऐसा नहीं होगा।"

प्रिंसी को उसकी रोनी सूरत देखकर हँसी आ गयी। उसने अपने थैले से एक फल निकाला और उसे दे दिया। बड़ा बंदर बहुत खुश हुआ। उसने खुशी-खुशी तरह-तरह की मुद्राएँ बनायीं। प्रिंसी भी खुश होकर उन्हें कैमरे में कैद करती रही।

यह खेल चल ही रहा था कि एक तेंदुआ उछल कर वहाँ आ गया। बड़ा बंदर डर कर कुछ दूर जा कर बैठ गया। उसे तेंदुआ का इस तरह आना अच्छा नहीं लगा। अभी तो वह बहुत सारे पोज देकर एक दो फल और पाने की जुगत लगा रहा था।

प्रिंसी भी तेंदुआ के अचानक आने से चौंक कर चार कदम पीछे हट गयी। लेकिन डरी नहीं। पिछली बार जब वह आयी थी, तब झाड़ियों के पीछे शायद यही तेंदुआ था जो बहुत देर तक उसे ताकता रहा था।

तेंदुआ निश्चिंत होकर एक ठूँठ पर संतुलन बना कर खड़ा हो गया और प्रिंसी की ओर देखने लगा। मानो कह रहा हो - "लो खींच लो मेरा फोटू..।"

प्रिंसी ने भी देर करना उचित नहीं समझा। फटाफट कई फोटो उस तेंदुए के अलग-अलग मुद्राओं में ले लिए।

"सॉरी स्पॉटी! मेरे पास तुम्हारे खाने लायक कुछ भी नहीं है। और इतने अच्छे फोटोज के लिए धन्यवाद।". प्रिंसी ने उसके धब्बेदार शरीर को देखते हुए नया नाम दे दिया 'स्पॉटी'।

तेंदुआ ने एक लम्बी उबास भरी जमुहाई ली। उसके नुकीले पैने दाँत चमक उठे। वह अपनी लम्बी जीभ से खुद का दाँया पैर चाटने लगा। शायद उसे कुछ चोट लगी थी।

उसने फिर कुछ रोष भरी नजरों से प्रिंसी को देखा। प्रिंसी मुस्करा दी।

बंदर अभी भी एक किनारे पर बैठा हुआ था। थोड़ी दूर इधर-उधर जा कर वह फिर वहीं वापस आ जाता था।

"मिस्टर स्पॉटी! तुम घना जंगल छोड़कर यहाँ क्यों आ जाते हो।" प्रिंसी ने तेंदुए की ओर देखते हुए कहा।

तेंदुआ हाँफता रहा, पर कहा कुछ नहीं। शायद वह जान चुका था कि यह इंसान न तो हमारी बोली समझते हैं न ही भावनाएँ।

उसने उलाहना से प्रिंसी देखा। मानो कह रहा हो कि."जहाँ तुम खड़ी हो वहाँ पहले घना जंगल ही था। और यहीं हमारे पूर्वजों का आवास था। हमारा बचपन भी यहीं बीता। जिस ठूँठ पर मैं अभी खड़ा हूँ। वह बहुत पुराना और सबका प्यारा वृक्ष था। लेकिन इंसानों ने हमारा आवास हमसे छीन लिया।"

तेंदुए ने फिर जमुहाई ली। गर्दन ऊँची कर दाँए-बाँए हवा सूँघ कर अपने शिकार का अनुमान लगाना चाहा। बंदर सतर्क हो गया। तेंदुआ भी अभी उसके शिकार के मूड में नहीं था।

"अब तुम यहाँ से जाओ। प्लीज..!" प्रिंसी ने तेदुआ से कहा।

तेंदुए ने प्रिंसी की ओर देखा मानो कह रहा हो तुम लोगों ने हमारे रहने लायक न जंगल छोड़ा और न ही वातावरण। अब हम कहाँ जायें?"

एक बार उसने अंगड़ाई ली और छलांग लगा कर बचे-खुचे जंगल में गुम हो गया।

सीख मिल गयी

खराब मौसम को देखते हुये मधुवन के स्कूल प्रबंधन ने आज इन्टरवल के बाद बच्चों को छुट्टी दे दी। और स्कूल बस से सभी विद्यार्थियों को सुरक्षित घर पहुँचा दिया। ब्राउनी खरगोश जो अभी दूसरी कक्षा में ही पढ़ता था, जल्दी घर आकर बहुत खुश हुआ। कुछ देर कार्टून देखता रहा फिर टी. व्ही. छोड़ कर मम्मी के पास पहुँच गया। घर के काम निबटा कर मम्मी कुछ पल चैन की साँस लेना चाहती थीं। मम्मी ने ब्राउनी को अपने कमरे में जाकर खेलने को कहा। ब्राउनी अपनी मम्मी का कहना मानकर दूसरे कमरे में जाने लगा तभी उसकी नजर मम्मी के मोबाइल पर पड़ गयी। उसने मम्मी से नजर बचाकर चुपके से मोबाइल उठाया और अपने कमरे में आ गया। मम्मी-पापा ने आज के समय की आवश्यकता समझ कर मोबाइल के कुछ जरूरी फंक्शन ब्राउनी को भी सिखा दिये थे, ताकि आवश्यकता आने पर वह भी इसका उपयोग कर सके। ब्राउनी को एक बात सूझी। उसने मैसेज टाइप किया कि-"जल्दी घर आ जाओ ब्राउनी... " और पापा को यह आधा- अधूरा मैसेज भेज दिया। वह यह सोच कर खुश था कि पापा समझ जायेंगे कि ब्राउनी घर आ गया है। और उन्हें भी घर जल्दी आने को कह रहा है। कुछ देर और वह मोबाइल पर गेम खेलता रहा।इसी बीच बैटरी डिस्चार्ज हो गयी। लापरवाही से क्लिक करने से मोबाइल भी स्विच ऑफ हो गया।

ऑफिस में लंच टाइम में जब पापा ने मैसेज पढ़ा तो वह घबरा गये। उन्हें कैसे पता चलता कि मैसेज ब्राउनी ने भेजा है, उन्हें लगा कि यह मैसेज ब्राउनी की मम्मी ने भेजा है। पापा ने अनेक बार कोशिश की लेकिन हर बार मोबाइल स्विच ऑफ बता रहा था। उनकी घबराहट और बढ़ गयी। उन्होंने ऑफिस से छुट्टी ली और स्कूटर तेजी से घर की ओर दौड़ा दिया। घर पहुँचने की जल्दबाजी व घबराहट में एक दो जगह टकराने व गिरने से बचे। लेकिन इस बार वह घर के नजदीक पहुँच कर भी संतुलन न रख सके और गिर पड़े।

उनका ब्लडप्रेशर बढ़ गया। चोट भी आयी। कुछ पड़ोसी जानवर मित्रों ने सहारा देकर उन्हें घर तक पहुँचाया। दरवाजा अंदर से बंद था। मम्मी गहरी नींद में थी। ब्राउनी भी खेलते खेलते सो गया था। आवाज लगाने पर भी जब दरबाजा नहीं खुला तो ब्राउनी के पापा किसी अनहोनी की आशंका से और अधिक घबरा गये। जोर जोर से दरबाजा पीटने की आवाज से ब्राउनी की मम्मी जाग गयी। दरबाजा खोला तो ब्राउनी के पापा को चोटिल व बदहवास देखकर उनका भी होश ठिकाने न रहा। फिर भी मम्मी व कुछ पड़ोसियों ने पापा को सहारा देकर बेडरूम में पहुँचाया और डाक्टर को फोन करने के लिए मोबाइल खोजने लगी। इस बीच ब्राउनी भी जाग गया था और अब मम्मी - पापा को इस तरह परेशान देखकर उसके भी तोते उड़ गये थे ।

पापा ने कराहते हुए ब्राउनी की मम्मी से पूछा कि - घर जल्दी आने का मैसेज क्यों किया? और मोबाइल बंद क्यों कर लिया?

उन्हें कुछ पता ही न था बेचारी क्या उत्तर देती। बस यही कहा कि "ना तो मैने कोई मैसेज भेजा न ही मोबाइल बंद किया है।" वह अपना मोबाइल फिर खोजने लगी।

तो फिर तुम्हारे मोबाइल से मैसेज किसने भेजा? और तुम्हारा मोबाइल कहाँ है? "पापा ने फिर पूछा।

"घर पहुँचने की जल्दबाजी में मैं गिर पड़ा और चोट लग गयी।" पापा ने कराहते हुये कहा। लेकिन घर पर सब कुशल देखकर उन्होनें चैन की साँस ली। ब्लडप्रेशर भी सामान्य होने लगा था।

ब्राउनी टुकुर टुकुर दोनों को ताक रहा था। अब तक वह समझ चुका था कि उसकी शरारत के कारण पापा को चोट लगी है। वह अपने कमरे में गया और मोबाइल लाकर मम्मी को थमा दिया।

"ब्राउनी क्या यह शरारत तुम्हारी है?" मम्मी ने पूछा।

ब्राउनी की आँखों में आँसू आ गये, और वह अपने पापा से चिपक कर जोर जोर से रोने लगा।

अब पूरा मामला दर्पण की तरह साफ था। पहले तो मम्मी पापा को गुस्सा आया लेकिन उसकी इस शरारत पर उन्हे भी हँसी आ ही गयी।

पापा ने ब्राउनी को गले से लगा लिया लेकिन आगे फिर कभी इस तरह की शरारत न करने की चेतावनी भी दी।

ब्राउनी को भी बहुत बड़ी सीख मिल गयी थी। उसने प्रामिस किया कि भविष्य में वह कभी कोई शरारत नहीं करेगा।

मिठ्ठू का नया मित्र

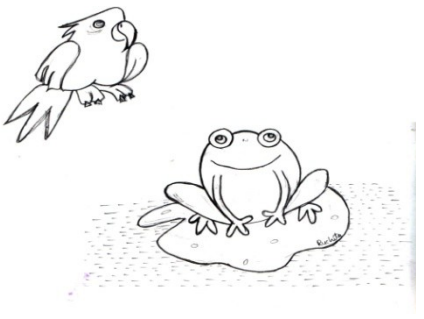

मिठ्ठू तोता गाँव के रघुवर काका के अमरूद के पेड़ से स्वादिष्ट अमरूद खा रहा था। रघुवर काका को अपनी ओर आते देखा तो उड़कर गाँव के बाहर तालाब पर आ गया। वह अक्सर इसी तालाब की पार पर खड़े नीम के पेड़ पर ही अपना ज्यादा समय बिताता है। मिठ्ठू ने देखा तालाब के किनारे उसका नया मित्र मेंढक धूप का आनंद ले रहा है। मिठ्ठू उड़ कर उसके पास आ गया। लेकिन हर बार की तरह मेंढक डर कर पानी में नहीं कूदा, बल्कि उछल कर तोते के और पास आ गया। मिठ्ठू भी पहले उससे डर कर उड़ जाता था, लेकिन वह भी आज डरा नहीं। दोनों ही समझ गये थे कि उन्हें एक दूसरे से कोई नुकसान नहीं होगा।

मिठ्ठू उसे मित्र मान चुका है, यह जानकर मेंढक को बहुत अच्छा लगा। उसने टर्र-टर्र करते हुए खुशी से अपना अगला दाहिना पैर आगे बड़ा दिया। मिठ्ठू ने भी टें-टें करते हुए अपने दाहिने पैर का पंजा बड़ा दिया। अब दोनों ही पक्के दोस्त बन गये।

"तुम पानी और जमीन पर इतनी आसानी से कैसे रह लेते हो? मिठ्ठू ने आश्चर्य से मेढक से पूछा।

मेंढक ने मुस्कुराते हुए कहा." मित्र, अगर तुम हमारे शरीर को ध्यान से देखोगे तो स्वयं समझ जाओगे। देखो हमारा शरीर आगे से बिल्कुल नाव के समान दिखाई देता है। हमारे पिछले पैर देखो! यह पतले व लम्बे तो हैं ही साथ ही साथ पैरों की उंगलियों के बीच यह पतली लचीली झिल्ली भी है। पानी में तैरते समय यही पैर पतवार का काम करते हैं। " कह कर मेंढक ने छलाँग मारी और तैर कर वापस मिठ्ठू के पास आ गया।

मिठ्ठू ने मेंढक के पैरों को आज पहली बार इतने पास से देखा उसे बहुत अचंभा हो रहा था।

"मित्र मुझे दुख है कि तुम्हारे दो ही पैर हैं।" मेंढक ने मिठ्ठू से कहा,.. इस बार मिठ्ठू टें-टें करके हँसा और बोला- "दोस्त! यह जो हमारे पंख हैं, यही अगले पैर हैं हम सभी पक्षियों में यह इस रूप में बदल गये हैं।"

उसने मेंढक से फिर पूछ लिया- "लेकिन डुबकी लगाते समय तुम्हारी आँखों में पानी भर जाता होगा। क्या आँखें दुखती नहीं है?"

"बिल्कुल नहीं! हमारी पलकों के किनारों पर एक पारदर्शी पतली झिल्ली होती है। डुबकी लगाते समय चश्में की तरह हम इसे आँखों पर चढ़ा लेते हैं। " मेंढक ने उस पारदर्शी झिल्ली को अपनी आँखों पर चढ़ाते हुए कहा।

"मेंढक भाई! यह चश्मा लगा कर तो तुम बिल्कुल गोताखोर लग रहे हो। " मिठ्ठू ने मजाक में कहा।

"लेकिन इतनी देर तक पानी में साँस कैसे लेते हो? " मिठ्ठू ने एक सवाल और पूछ लिया। उसे अपने नये दोस्त मेंढक की यह रोचक बाते देखकर और सुनकर बड़ा मजा आ रहा था।

"यह हमारी इस त्वचा या चमड़ी का कमाल है। पानी में जाते ही यह पानी में घुली आक्सीजन को सोख कर हमारे खून में पहुँचा देती है। जमीन पर तो हम तुम्हारी ही तरह फेफड़ों से साँस लेते हैं।" मेंढक ने दोस्ताना अंदाज में कहा।

"हाँ! लेकिन हम उड़ते समय भी अपने फेफड़ों में हवा भरकर फुला लेते हैं, जिससे हमारा शरीर हल्का हो जाता है और हमें उड़ने में आसानी होती है।" मिठ्ठू ने भी अपनी यह विशेषता मेंढक को बतायी।

तभी वहाँ एक टिड्डा कूदता हुआ उस तरफ आता दिखा तो मेंढक ने अपनी जीभ बाहर निकाल कर उसे पकड़ना चाहा। लेकिन टिड्डा सावधान था, वह उछल कर मेंढक की पहुँच से दूर चला गया।

"तुम्हे इन कीटों का स्वाद कैसा लगता है? " मिठ्ठू ने मेंढक से पूछा।

"भाई हम स्वाद नहीं जानते। हम तो कीटों को पकड़ कर सीधे निगल जाते हैं। इसीलिए हमारी जीभ पर स्वाद कलिकाएँ नहीं पायी जातीं।" मेंढक ने एक उछाल लेकर कहा।

"एक बात और बताऊँ। हमारी जीभ तालू में आगे की ओर दाँतों के पास जुड़ी होती है, और स्वतंत्र सिरा अंदर की ओर होता है।"

मेंढक नयी नयी बातें बता कर खुश हो रहा था।

"अरे दाँत हैं, फिर भी चबाते नहीं हो।" मिठ्ठू ने कहा

"हाँ भाईहमारे दाँत न खाने के काम आते हैं न ही दिखाने के। इनका काम केवल शिकार पकड़ने के बाद जबड़ों को बंद रखने का है, ताकि वह शिकार मुँह से बाहर न निकल सके।" मेंढक ने कहा।

"भाई हमें तो मीठे व स्वादिष्ट फल अच्छे लगते हैं। जिन्हे हम कुतर कुतर कर और स्वाद ले-ले कर खाते हैं। मिठ्ठू ने भी अपने पंख फड़फड़ाते हुए कहा।

अचानक तोता टें-टें करते चिल्लाया- "अरे इधर देखो यहाँ किनारे पर कितनी छोटी-छोटी मछलियाँ हैं।"

मेंढक उछलता हुआ वहाँ पहुँचा और उन्हें देखकर बोला- "तोता भाई! यह मछलियाँ नहीं हैं। यह तो हमारे बच्चे हैं। अंडों से निकल कर कुछ दिनों तक हम इसी रूप में रहते हैं। मछलियों जैसे इस रूप में लोग हमें 'टेडपोल' कहते है।

तोता अपने इस नये दोस्त के बारे में इतनी नयी नयी जानकारी पाकर भूल ही गया था कि उसे अब गाँव का एक चक्कर और लगाना है।

वह कुछ और पूछना ही चाहता था। कि कुछ जानवर वहाँ पानी पीने आ गये। उनकी आहट पाकर मेंढक पानी में कूद गया। पानी से 'छपाक' की आवाज आई।

"मित्र मेंढक, हम कल फिर मिलेंगे।" कहकर तोता भी टें-टें करते हुए गाँव की ओर फुर्र हो गया।

जैसा खोया वैसा पाया

कुछ दिनों से सूर्य देव बहुत क्रोधित हो रहे थे।इन मनुष्यों को क्या हो गया है? सारे जंगल काट दिये। अब मेरी किरणें कहाँ खेलेंगी।

किरणें तो सूर्य से भी ज्यादा गुस्से में मचल रही थीं। पृथ्वी पर सबसे पहिले उनका स्वागत करने वाले वृक्ष ही नहीं छोङे इन मूर्खों ने।किरणों ने तो मानो सबको झुलसाने की कसम खा ली हो।

किरणों को लगा कि समुद्र की लहरें उछल-उछल कर उन्हें चिढ़ा रही हैं।

फिर तो उनका सारा गुस्सा समुद्र की लहरों पर उतरने लगा।बेचारी लहरों का पानी कब तक सहता। भाप बनकर उङ चला आकाश की ओर- ऊपर... और.. ऊपर.....।

यहाँ समुद्र ने नदियों से कहा- "मेरी प्यारी नदियो आओ, जल्दी-जल्दी पानी लाओ।

सभी नदियाँ राजा समुद्र की आज्ञा कैसे टालतीं। जल्दी जल्दी ज्यादा से ज्यादा पानी समुद्र की ओर भेजने लगीं।मनुष्य ने भी चतुराई दिखाई। नदियों पर बाँध बना लिये,ऊँचे....खूब ऊँचे.....।

बेचारा समुद्र उदास हो गया ।

किरणों का गुस्सा अभी भी शाँत नहीं हुआ।अब तो मनुष्य भी उनकी चपेट में आ गये।नदियों नहरों और बाँधों का पानी भी भाप बनकर उढ़ने लगा।

ऊपर..और ऊपर.....।

कहते है न कि गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है ।किरणों को पता चला कि धरती नीचे से चुपके-चुपके नदियों को पानी पहुँचा रही है।

सो नदियों के साथ-साथ धरती भी किरणों की चपेट में आ गयी।किरणें धरती के भीतर धँसकर वहाँ के पानी को भी भाप में बदलने लगी।वहाँ का पानी भी भाप बनकर उङने लगा।ऊपर..... और ऊपर...।

बर्फीले पहाडों पर भी मुसीबत आ गई।वह भी तो धरती के ही पुत्र थे।

ग्लेशियर टूट टूट कर रोते बिलखते नदियों और समुद्र में आने लगे। किरणों का गुस्सा अभी भी शांत नही हुआ था।आकाश से सूरज दादा भी घूम घूम कर उन्हें उकसा रहे थे।जहाँ पानी मिला ,भाप बनी ।भाप उडकर चली आकाश की ओर ऊपर...और..ऊपर..... .।

नदियों का तो हाल बुरा,उनसे मछलियों की छटपटाहट देखी न जाती।

पूछ रही है मछली रानी
कहाँ गुम हुआ सारा पानी।
नदियाँ क्या उत्तर दें।
उन्हें भी मनुष्य पर क्रोध आता।
पर कुछ कर न पातीं,
बेचारी चुप रह जातीं।

भाप का बनना और आकाश की ओर जाना चलता ही रहा-- ऊपर .... और... ऊपर..... और ऊपर....।

ऐसी झुलसती गर्मी में बच्चों का घर से निकलना मुश्किल हो गया ।

बेचारी नेहा भी जिसे सब नन्ही कहकर बुलाते हैं,दिन में घर से कहीं निकल ही न पाती ।

"दादी ,इतनी गर्मी क्यों पड रही है ?

"नन्ही रानी धरती पर हरियाली लाने वाले पेड-पौधे ही नहीं बचे।गर्मी तो बढ़ेगी ही।दादी ने हाथ का पंखा झलते हुये कहा।

"आजकल बिजली भी बहुत जा रही है।

ए.सी. कूलर चला ही नहीं पा रहे।"पापा ने बेचैनी से कहा।

"फ्रिज में भी आईसक्रीम जमना तो दूर पानी तक ठंडा नहीं हो रहा।"मम्मी ने खीजते हुये कहा।

"अभी देखते जाओ,साँस लेना भी मुश्किल हो जायेगा।" दादा जी ने कहा ।

नन्ही सोच में पड गयी , 'बिजली का और साँस लेने का पेडो से क्या संबंध हो सकता है।'

उसने दादा जी पूछ ही लिया ।

दादा जी ने समझाते हुये कहा-"मेरी नन्ही परी, वृक्ष बादलों के मन भाते
रिमझिम रिमझिम पानी लाते ।
सोचो वृक्ष नहीं तो बादल नहीं
बादल नहीं तो पानी नहीं ।"

और बिजलीघर में बिजली पानी या कोयला से ही तो बनती है।

"और साँस क्यों नहीं ले पायेंगे?"नन्हीं ने पूछा तो इस बार मम्मी ने उत्तर दिया- "बेटी श्वास लेते समय आक्सीजन गैस फैफडो से शरीर में जाती है और कार्बन डाई आक्साइड छोडी जाती है। यह आक्सीजन हमें पेडों से ही तो मिलती है।"

"और इंसान अब भी वृक्ष काटे जा रहा है।" पापा ने कहा।

"पापा हम भी तो इंसान हैं न!"

नन्ही की इस बात पर सब एक दूसरे का मुँह देखने लगे।

दादी ने नन्ही से कहा - "हम अगर वृक्ष काट सकते हैं तो वृक्ष उगा भी सकते हैं"

"लेकिन दादी हम अकेले क्या कर सकते हैं?" नन्ही ने कहा

दादा जी ने फिर कहा-" अकेले क्यों ?हम सब हैं ।काम अच्छा हो तो बहुत सारे लोग साथ देने आ जाते हैं।

"दादा जी सबको साथ लेने के लिये कुछ तो कहना पडेगा?" नन्ही ने सवाल किया।

दादी इसके लिये पहिले से तैयार थी।

बोलीं" हम सबसे एक ही बात कहेंगे कि-

"धरती पर जीवन बचाएँगे,हम एक पौधा लगाएँगे ।"

नन्ही को यह उपाय बहुत अच्छा लगा।

शाम को पार्क में उसने यह बात प्रिया ,अहान रानू विभु सबको बताई। सबने एक साथ कहा -

"धरती पर जीवन बचाएँगे,हम एक पौधा लगाएँगे।"

सब जल्दी घर पहुँचे और अंधेरा होने से पहिले ही सबने अपने पापा मम्मी दादा दादी के साथ मिलकर एक एक पौधा रोप ही दिया।

अगली सुबह सबने अपने स्कूल में प्रिंसिपल को यह बात बताई ,प्रिंसिपल ने इंटरवल में सब बच्चों को इकट्ठा कर यह बात बताई।सबने एक स्वर में कहा-

"धरती पर जीवन बचाएँगे,हम एक पौधा लगाएँगे।"

और फिर तो ऐसा माहौल बना कि गाँव-गाँव, शहर-शहर बस एक ही अभियान और एक ही नारा- "धरती पर जीवन बचाएँगे,हम एक पौधा लगाएँगे।"

वृक्षारोपण से धरती पर छोटे -छोटे पौधों की हरियाली छा गई।यह देखकर हवा को भी जोश आया। वह आसमान में यहाँ -वहाँ उड रहे भाप के समूहों को इकठ्ठा करने लगी।संगठन में बहुत शक्ति होती है।

भाप के समूह , मिले परस्पर मेघ बने

गहरे-काले और घने।

बडे-बडे बादल गरजते बिजली चमकाते हवा के साथ-साथ उड चले। धरती पर नन्हे पौधों को देखकर सूरज दादा भी कुछ नरम पड गये उन्होनें अपनी किरणों से शांत

होने को कहा वे वैसे भी थक चुकी थीं,शांत हो गयीं। हवा बादलों को उडाकर पर्वतों और जंगलों की ओर ले गईं।

वहाँ वृक्षों से कुछ बात हुई

फिर रिमझिम बरसात हुई ।

कई दिनों तक खूब पानी गिरा नदियों ,बाँधों और समुद्र से जो पानी भाप बनकर उड गया था वही बादल बनकर बरस रहा था।

समुद्र भी खुश ।

नदियाँ भी खुश,और धरती भी खुश,

पौधे भी खुश ,और नन्ही भी खुश ।

सब खुश ।

दादा जी ने कहा-

"बरसा जल धरती पर आया

जैसा खोया वैसा पाया।"

स्वीटी की- 'सब्जी-सेना'

"स्वीटी, सुयश आ जाओ, खाना तैयार है।" माँ ने किचन से ही आवाज दी,..!

रात के आठ बजे थे। दोनों भाई बहिन ने कॉपी किताब बंद की ओर स्टडी रूम किचन की ओर चल दिये।

"स्वीटी, इस कमरे का पंखा और लाइट बंद कर दो। अनावश्यक क्यों जलाएँ।" सुयश ने कहा।

पाँच साल की चुलबुली स्वीटी को तुकबंदी करने का शौक था।

पंखा व लाइट का स्विच ऑफ करते हुए वह गुनगुनाने लगी।

"खुद समझें सबको समझाएँ, आवश्यक हो तभी जलाएँ।"

"अरे वाह मेरी नन्ही कवयित्री!" कह कर सुयश ने स्वीटी को प्यार भरी झप्पी दे दी।

भोजन में आज भी हरी सब्जियाँ व सलाद आदि देख स्वीटी नाक-भौंह सिकोड़ कर बोली

"माँ! तुम रोज रोज सब्जी क्यों बनाती हो?"

"सब्जी के साथ दाल भी तो है!" माँ ने कहा

"दाल भी रोज रोज बनाती हो" स्वीटी ने नटखट-पन से कहा।

अच्छा बताओ तुम्हे क्या अच्छा लगता है कल वही बना देंगे" माँ ने पूछा

बेचारी स्वीटी क्या कहे! उसे तो कोई सी भी सब्जी पसंद नहीं थी। कुछ नहीं सूझा तो सयानी बन कर बोली-

"माँ सोचो जरा, सब्जी खरीदने में कितने पैसे खर्च होते हैं, इतने पैसों में कितनी सारी अच्छी अच्छी चाकलेट आ जाएँगी। आप भी इन्हें देखकर ललचाएँगी।"

कहते कहते स्वीटी के मुँह में पानी आ गया।

"स्वीटी! हरी सब्जियां व दाल आदि हम स्वाद के लिए नहीं बल्कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए खाते हैं।" सुयश ने कहा।

"तो क्या चाकलेट, जलेबी समोसा खाने से स्वास्थ्य नहीं बनता? स्वीटी ने प्रश्न किया।

"नहीं! यह केवल स्वाद में अच्छे लगते हैं।

स्वस्थ रहने के लिए तो हरी सब्जियाँ व दाल आदि ही जरूरी व लाभदायक हैं।" माँ ने कहा।

"हरी सब्जियाँ स्वास्थ्य के लिए कैसे लाभ पहुँचाती होंगी।" स्वीटी ने आश्चर्य से पूछा ।

सुयश ने मुस्करा कर कहा- "अभी खाना खा लो। सोने से पहले तुम्हारे सभी सवालों का जबाब तुम्हे मिल जायेगा।"

खाना खाने के कुछ देर बाद सोने से पहले दोनों अपनी माँ के साथ, माँ का लैपटॉप लेकर बैठ गये।

सुयश ने स्वीटी को बताया कि- "दालों से हमे प्रोटीन तथा हरी सब्जियों से पोषक तत्व व विटामिन मिलते हैं जो पोषण के लिए जरूरी हैं।"

"हाँ! शरीर में इनकी कमी से व्यक्ति कुपोषण का शिकार हो जाता है।" माँ ने कहा।

सुयश ने हरी सब्जियों में पाये जाने वाले विटामिन ए,बी,सी,डी,ई और उनकी कमी से होने वाली बीमारियों के नाम भी स्वीटी को बताए। जब इन बीमारियों के कुपोषित व्यक्तियों के फोटो लैपटॉप पर दिखाये तो स्वीटी काँप गयी। माँ ने लैपटाप बंद कर स्वीटी को गले लगा कर कहा

"स्वीटी, कुछ समझ आया?"

"हाँ माँ समझ गई"

"क्या समझ गई?" सुयश ने पूछा

"स्वस्थ रहेंगे, रोगों से भी हम बच पाएँगे

हरी सब्जियाँ और दाल यदि प्रतिदिन खाएँगे।"

स्वीटी ने चहकते हुए अपनी तुकबंदी सुना दी,.

"चलो! अब सो जाओ" माँ ने कहा

स्वीटी को कब नींद आई और कब सपनों में खो गई पता ही नहीं चला।

स्वीटी ने देखा कि राक्षसों जैसी अनेक आकृतियाँ उसके सामने खड़ी है -

कौन हो तुम? स्वीटी ने डरते हुए पूछा

"मैं 'कुपोषण' हूँ। और ये 'एनीमिया' 'रतौंधी' 'स्कर्बी' 'बेरी बेरी' 'घेंघा' आदि सब मेरे सैनिक हैं।" उनके मुखिया ने अट्टहास किया।

"जो सब्जियों से चिढ़ते हैं, हम उनसे ही भिड़ते हैं।"

उन सभी आकृतियों में एक स्वर में कहा।

सब स्वीटी पर आक्रमण की तैयारी करने लगे।

स्वीटी ने अपना साहस नहीं खोया था लेकिन स्वयं को बिल्कुल अकेला पा रही थी। तभी चमत्कार हो गया। गाजर पालक, लौकी मटर,टमाटर मैथी, चौलाई, नीबू,

मिर्च, गोभी आदि अनेक सब्जियां बहादुर सैनिकों के रूप में स्वीटी की रक्षा के लिए उपस्थित हो गईं।

इस 'सब्जी-सेना' से डरकर कुपोषण की 'दुष्ट-सेना' दुम दबा कर भाग गयी। स्वीटी ने 'सब्जी-सेना' को धन्यवाद दिया। स्वीटी और सब्जी सेना अपनी विजय पर खुश होकर नाचने लगी। अचानक गोभी का धक्का लगा तो वह गिर गयी। गिरते ही स्वप्न टूट गया। नींद खुली तो देखा, सबेरा हो चुका था, और सामने माँ और सुयश खड़े मुस्करा रहे हैं ।

"स्वीटी, ऐसा लग रहा था जैसे तुम स्वप्न में किसी के साथ नाच रही थीं।" माँ ने पूछा।

स्वीटी को स्वप्न में देखी अपनी 'सब्जी-सेना' याद आ गई, वह मुस्करा दी।

"तुम्हारी मुस्कराहट देखकर लगता है कि तुमने कोई अच्छा स्वप्न देखा है। क्या फिर कोई कविता तुम्हारे मन में उपज रही है।" माँ ने कहा।

"हमे भी सुनाओ ।" सुयश ने कहा

स्वीटी पलंग पर खड़ी हो गई और सुंदर हाव-भाव बना कर बोली-

"मैं अब सुबह-शाम भोजन में-खाऊँगी सब्जी-भाजी।
ताजी हरी सब्जियाँ लाना- ओ! मेरी अच्छी माँ जी।"

तीनों एक दूसरे का हाथ पकड़कर हँसते हुए गोल गोल नाचने लगे।

पुरस्कार

"माँ देखो,मैं तैयार हो गई।" अपनी दोनों चोटी हिलाते हुये और नया फ्रॉक अपनी माँ को दिखाते हुये पिंकी चहक कर बोली।

"प्रकाश भैया को बोलो ,वह भी जल्दी तैयार हो जाय। गुप्ताआंटी के घर जल्दी पहुँचना है।"माँ ने कहा।

"माँ मैं दो मिनट में तैयार होता हूँ। छत पर गमलों के पौधों को पानी दे रहा था।"

पिंकी के पापा के देहान्त के बाद पिंकी की माँ गुप्ता आंटी के घर खाना बनाती हैं। आज उनके छोटे बेटे की शादी में गुप्ता आंटी ने बच्चों को भी साथ लाने का आग्रह किया था। आंटी बिल्कुल अपने बच्चों जैसा प्यार पिंकी व प्रकाश से करती हैं।

"पिंकी पंखा बन्द करो,चलना है अब" प्रकाश ने कहा।

"हाँ!नहीं तो बिजली का बिल बढ़ेगा।" पिंकी ने कहा।

"हाँ! और फालतू बिजली जलाने से भी क्या मतलब ?"प्रकाश ने समझदारी दिखाते हुये कहा।

पिंकी को कोई कविता याद आ गई।पंखा बंद करते हुये वह गुनगुनाने लगी।

"बिजली बड़े काम की बिजली
केवल नहीं नाम की बिजली।
"खुद समझें सबको समझाएँ
आवश्यक हो तभी जलाएँ ।"

"वाह ! मेरी छुटकी कवयित्री।" कहकर प्रकाश ने अपनी बहिन की प्यार भरी झप्पी ले ली।

माँ के साथ दोनों भाई बहिन भी गुप्ता आंटी के बंगले पर पहुँच गये। पूरा बंगला फूलमालाओं व गुलदस्तों से सजाया जा रहा था।कई तरह की रंगीन बल्ब की सीरीज जगह जगह लटकाई जा रही थी। फूल -पत्तियों से सजेआकर्षक गमले भी कतार में रखे जा रहे थे।

पिंकी की माँ जाते साथ ही काम में व्यस्त हो गई। पिंकी वहीं गार्डन में बने छोटे से बाटर पूल के पास पहुँच गई। पूल की छोटी-छोटी मछलियाँ उसे बहुत प्यारी लगती थी। वह उन मछलियों को यहाँ-वहाँ तैरते देखकर खुश हो रही थी।

वह गुनगुनाने लगी-

"मछली रानी मछली रानी

पास तुम्हारे कित्ता पानी।"

उसे लगा जैसे मछली भी उससे कह रही है-

"पिंकी रानी पिंकी रानी

सीखो जरा बचाना पानी।"

तभी गुप्ता आंटी का बुलावा आ गया।

पिंकी और प्रकाश को उन्होनें नाश्ते की प्लेट देते हुये कहा- "तुम लोग भी नाश्ता कर लो कुछ ही देर में बारात के साथ चलना है।" "और हाँ! माँ को लेकर परेशान मत होना, वह हमारे साथ काम में हाथ बँटा रही है।"

"जी आंटी जी।" दोनो ने कहा।

बेसिन में हाथ धोकर प्रकाश ने रुमाल से खुद के और पिंकी के हाथ पोंछे और पकवानों का स्वाद लेने लगे।

सभी बारात में शामिल होने के लिये सज-संवर रहे थे।शाम होते ही तामझाम,व बाजे-गाजे के साथ बारात उस मैरिज गार्डन की ओर रवाना हुई जहाँ दुल्हन का परिवार ठहरा था और जहाँ शादी व रिसेप्शन का भी इंतजाम था।

बैंड की धुन पर सभी नाच रहे थे। प्रकाश भी पिंकी का हाथ थामे साथ-साथ चल रह था।

प्यारी प्यारी धुन सुनकर पिंकी के पैर भी थिरक रहे थे। प्रकाश भी नाचने से स्वयं को रोक नहीं पा रहा था। वह भी चुपके चुपके थिरकने लगा।गुप्ता अंकल ने जब उन्हें थिरकते हुये देखा तो दोनों का हाथ पकड कर बैंड के सामने जहाँ सब लोग नाच रहे थे ,ले गये और स्वयं भी ताली बजाकर दोनों के साथ नाचने लगे। फिर तो दोनों भाई-बहिन झूमकर नाचने लगे,उनकी थिरकन देखकर सभी प्रसन्न हो गये। यह देख पिंकी की माँ की आँखें खुशी से नम हो गईं।कुछ देर बाद माँ का इशारा पाकर दोनों अलग हट गये। गुप्ताआंटी ने पिंकी को पास बुलाया और माथा चूम लिया। पिंकी खुश हो गई वह गुप्ता आंटी के पैर छूने झुकी तब तक तो वह आगे बढ़ चुकी थी। उसी समय पिंकी की नजर वहाँ एक चमकती चीज पर गयी। पिंकी ने उठाकर देखा तो देखती ही रह गयी। वह सोने का हार था। अचानक उसे कुछ न सूझा तो उसने उसे मुठ्ठी में छिपा लिया। किसका होगा यह हार? कैसे पता लगाऊँ? तभी एक आंटी वहाँ आई और बोली - "अरे वह जेवर मेरा गिर गया है। ला मुझे दे।"

पिंकी को उसकी बात पर भरोसा नहीं हुआ। वह बोली - "कौन सा जेवर गिरा है आपका! बताइये?"

उन आंटी ने कहा "मेरी सोने की चैन है। ला जल्दी दे।"

पिंकी को विश्वास हो गया यह आंटी झूठ बोल रही हैं।

पिंकी ने कहा "ठीक है आप मेरे साथ चलिये मैं गुप्ता आंटी को दूँगी आप उनसे ले लेना।"

वह आंटी पिंकी से वह हार छीनने की कोशिश करने लगी तो पिंकी ने अपने भाई प्रकाश को जोर से आवाज देकर पुकारा।

प्रकाश को उस ओर आता देख वह आंटी पिंकी को घूरते हुये तेजी से दूसरी दिशा मेंआगे बढ़ गयी।

बारात गार्डन में पहुँच चुकी थी। पिंकी प्रकाश के साथ अपनी माँ के पास गई और वह हार दिखाया। माँ समझ गयी बारात में नाचते समय गुप्ता आंटी की किसी रिश्तेदार का ही गिर गया होगा।

वह पिंकी के साथ गुप्ता आंटी के पास गयी और वह हार उन्हे देकर पूरी सचाई बता दी। वह हार उन्होनें रख लिया। लगभग एक घंटे बाद गुप्ता आंटी की बेटी रमा को पता चला कि उसका हार कहीं खो गया है। ससुराल की ओर से मिला वह हार उसे बहुत प्यारा था। कीमती भी बहुत था। उसे रोना आ रहा था लेकिन भाई की शादी के खुशी के मौके पर खुद को रोक रही थी। गुप्ता आंटी कुछ देर तक तो यह देखकर मुस्कराती रही फिर रमा को बुलाकर वह हार उसे पहिना दिया। जब रमा को वास्तविकता का पता चला तो उसने पिंकी को गले से लगा लिया। शादी बड़े धूमधाम से संपन्न हुई।

राजा दुल्हा की, रानी दुल्हन हुई।

सब अपने-अपने घर रवाना हुये।

दूसरे दिन जब दोनों भाई-बहिन स्कूल से वापिस आये तो एक थैले में ढेर सारी मिट्टी साथ लेकर आये। स्कूल बैग अपनी जगह पर रख कर सीधे छत पर चले गये। बहुत देर हुई तो माँ ने नीचे से ही आवाज दी। थोड़ी ही देर में दोनों नीचेआये। माँ ने पूँछा-"छत पर क्या हो रहा था?"

"छत पर घड़ा पड़ा था औंधा
भाई ने उसमें रोपा पौधा।"

पिंकी ने चहकते हुये कहा।

"पिंकी पानी लेकर आई
उस पौधे की करी सिंचाई।"

प्रकाश ने भी तुक मिलाते हुये कहा।

अभी वह हाथ-मुँह धोने जा ही रहे थे कि एक कार उनके घर के सामने आकर रुक गई।उन्होनें देखा रमा दीदी किशन काका के साथ ढेर सारा सामान लेकर चली आ रहीं है।

आते ही उन्होनें पिंकी को गोद में उठा लिया। फिर ढेर सारे खिलौने एक सुंदर फ्रॉक और मिठाई के पैकेट थमा दिये। प्रकाश व माँ को भी कपडे आदि भेंट किये, कुछ देर रुक कर सबको धन्यवाद देकर वापस चली गई।

दोनो बहुत खुश हुये।

अगले दिन जब दोनों भाई-बहिन स्कूल से घर वापस आये तो पलंग पर गिफ्ट पैक देख कर अचंभा हुआ। अब यह गिफ्ट कौन लाया होगा!

स्कूल बैग झटपट रखकर दोनों अपना अपना गिफ्ट खोलने लगे। पिंकी प्यारा सा टैडी वियर देखकर खुशी से उछल उछल कर नाचने लगी। प्रकाश को भी उसका मनचाहा छोटा सा वायलिन मिल गया था।

"यह तुम दोनों के अच्छे व्यवहार व अच्छे काम के लिये मेरी ओर से पुरस्कार है।" माँ ने कहा।

"माँ यह हमारे लिए सबसे बड़ा पुरस्कार है।" प्रकाश ने कहा।

"हाँ..!माँ...।" पिंकी भी खुश होकर बोली।

दोनो माँ से चिपट गये। और माँ का हाथ पकड़ कर गोल गोल नाचने लगे।

भाग छोटी भाग

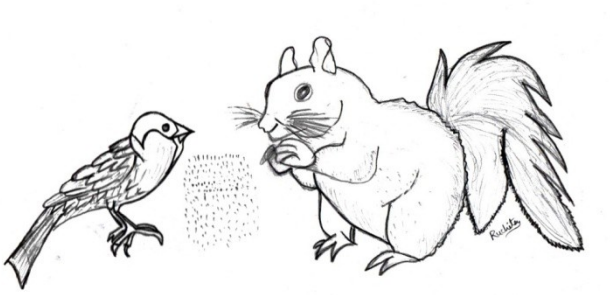

चिड़िया छत से उड़ी... फुर्र... उड़ कर अब गली की पक्की सड़क पर आ गयी।

बेचारी छोटी सी चिड़िया ज्यादा दूर उड़ भी तो नहीं सकती। स्कूली बच्चों से ठसाठस भरा एक ऑटो धुआं छोड़कर वहाँ से निकला। चिड़िया आवाज से डर कर फिर वहाँ से उड़ कर पास के एक कनेर पर बैठ गयी। उसकी साँसों में व फेंफड़ों में भी वही धुआं और धूल पहुँच गयी था।

"चीं... चीं... ची..." चिचिया कर उसने ऑटो वाले पर अपनी खीज उतारी। किंतु उसकी यह आवाज किसी सामान का प्रचार करे रहे एक भोंपू के तेज शोर में दब कर रह गयी। ऑटो वाले भैया व बच्चों तक उसकी चीं - चीं पहुँच ही नहीं सकी, तो भला समझते कैसे!

सूरज कुछ और ऊपर आ गया था, धूप भी तेज होने लगी थी। चिड़िया को सबेरे से अब तक एक दो दाने ही मिले थे। बेचारी का पेट अभी भी खाली था। गिलहरी को कनेर पर चढ़ता देखा तो वह वहाँ से फुर्र हो गयी। अभी गपशप लड़ाने का उसका बिल्कुल भी मन नहीं था। यहाँ वहाँ भटक कर एक घर के बाजू से निकली नाली के पास आ बैठी। शायद यहीं आसपास कुछ कीड़े-मकोड़े मिल जाएँ।

उस बेचारी को क्या पता कि नाली में छिड़की गयी दवा से मच्छरों के लार्वा के साथ-साथ आसपास के कीड़े-मकोड़े भी मर चुके थे। वह अपनी प्यास बुझाने के लिए नाली के पानी में चोंच डुबाना ही चाहती थी कि गिलहरी ने आकर उसे टोक दिया। गिलहरी के मुँह से कीटनाशक दवा के बारे में सुनकर बेचारी काँप गयी।

"धन्यवाद दीदी! आपने सही समय पर मुझे रोक दिया। नहीं तो मैं भी इस पानी को पी कर अब तक टैं बोल गयी होती।" उसने गिलहरी को धन्यवाद दिया और वहाँ से फिर फुर्र हो गयी।

"अगर सारे कीट इसी तरह नष्ट होते रहे तो, हम पंछियों को अन्य आहार की तलाश करनी पड़ेगी। " यही सोचते हुए कुछ दूर का चक्कर लगा कर वह फिर छत पर आ गयी।

लाडो की मम्मी अभी-अभी छत पर गेहूं सूखने के लिए डाल कर गयी थीं।

थोड़ी देर में गिलहरी भी वहाँ पहुँच गयी। उसे देखकर चिड़िया खुशी से चहक उठी - "चीं चीं चीं..." ।

"दीदी! यदि सभी कीट इसी तरह मारे जाएँगे तो हम तो केवल अन्न के दानों या फलों के बीज पर ही आश्रित रह जाएँगे। पहले बहुत सारे खेत थे, तो एक किसान के भगाने पर हम पास के ही दूसरे खेत पर पहुँच जाते थे। अब तो खेत भी मकानों में बदल रहे हैं।" चिड़िया ने छत पर सूख रहे गेहूँ से दाने चुगते हुए कहा। आज के खाने लायक पर्याप्त दाने उसे दिख रहे थे।

"मुझे भी चिंता हो रही है। इसी तरह यदि वृक्ष कटते रहे। खेत कम होते रहे तो विनाश ही विनाश है।" गिलहरी ने अपनी चिंता व्यक्त की।

"विनाश ही विनाश! वह कैसे??" चिड़िया ने कुछ आश्चर्य व कुछ जिज्ञासा से पूछा।

"सोच छोटी सोच!! अगर हम छोटे प्राणी नहीं रहेंगे तो हमें खाने वाले बाज, कौवा, कुत्ता आदि माँसाहारी प्राणी या तो भूखे मर जाएँगे या फिर खरगोश, हिरन, व घरों के पालतू जानवरों को अपना शिकार बनाएँगे। जानती है इसका क्या परिणाम होगा?" गिलहरी ने अपनी झबरी पूँछ हिलाते हुए चिड़िया से पूछा।

"बिल्कुल सीधी बात! धीरे-धीरे यह जानवर भी खत्म हो जाएँगे। चिड़िया ने सहज सा उत्तर दिया।

"फिर जंगल के खतरनाक पशु शेर, चीता, हाथी आदि क्या खाएँगे? कहाँ जाएँगे??" गिलहरी ने चिड़िया के सामने एक बड़ा सवाल और दाग दिया।

चिड़िया विचार में डूब गयी। शेर, चीता की बात तो ठीक है, लेकिन हाथी को बीच में क्यों घसीटा जा रहा है।

"दीदी! हाथी तो शाकाहारी है, उसे इससे क्या लेना-देना?" चिड़िया ने अपने मन की शंका गिलहरी से कह दी।

"छोटी! जंगल व वृक्ष भी तो नष्ट हो रहे हैं। तो वह भी तो अपना पेट भरने इन किसानों के बचे-खुचे खेतों व बाग-बगीचे की ओर ही तो दौडेंगे।

"अरे हाँ... ! यह तो मैं सोच ही नहीं पायी।" चिड़िया ने एक दाना और चुगते हुए कहा।

"शेर,चीता भी अपनी भूख मिटाने पहले गाँव के पालतू पशुओं को अपना शिकार बनाएँगे। य फिर नरभक्षी बन जाएँगे। फिर आपस में ही लड़-मर जाएँगे। पर्यावरण और जीवों का अभी जो एक प्राकृतिक संतुलन बना हुआ है। वह ज्यादा समय नहीं टिक पाएगा। कोई नहीं बच पाएगा।" गिलहरी ने अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए चिड़िया को समझाया।

"दीदी! वह तो जब होगा तब होगा। अभी तो अपनी जान बचाओ। वह देखो काली बिल्ली उस छत से कूद कर अब दबे कदमों से इसी ओर आ रही है।" चिड़िया ने गिलहरी को सचेत किया।

"हे भगवान! तूने सच कहा। भाग छोटी भाग.... "

कहकर गिलहरी वहाँ से छूमन्तर हो गयी।

चिड़िया ने भी जल्दी जल्दी कुछ दाने चुगे और काली बिल्ली के आने से पहले ही चीं--चीं... करते हुए फुर्र से उड़ गयी।

पौधे भूखे हैं

अमित घर आते-जाते जब भी गमलों की ओर देखता तो उदास हो जाता। कितनी महनत से व कितने प्यार से उसने गमलों में यह पौधे रोपे थे।

लेकिन इतने दिनों बाद भी किसी भी पौधे में फूलों का अता-पता नहीं दिख रहा था। वहीं पड़ोस के अभिनव के गमलों में चटक लाल रंग के फूल मुस्करा रहे थे।

खेल मैदान में उसने अपने दोस्त आकाश को यह बात बतायी तो आकाश ने कहा- "भाई मेरे घर में भी दो गमलों के पौधे सूख रहें हैं।"

"हो सकता है पौधे बेचने वाले ने हमें खराब पौधे दिए हों!" अमित ने अपनी शंका जाहिर की।

"मैं तो कल अपने पौधे उखाड़ कर फेंक दूँगा।" कुछ गुस्से से आकाश ने कहा।

अभिनव भी इन दोनों की बातों को सुन रहा था। उसने कहा- "अमित तुम कल हमारे घर आओ। पहिले हमारे गमलों के पौधे भी ऐसे ही मुरझा जाते थे। "

"फिर तुमने क्या किया?" आकाश ने उत्सुकता से पूछा।

"मैने नहीं! जो कुछ किया मेरे दादा जी ने किया। और अब बड़े प्यारे फूल लग रहे हैं।" अभिनव ने कहा।

दूसरे दिन स्कूल से घर आकर अमित और आकाश अपने-अपने गमले लेकर अभिनव के घर पहुँच गये। अभिनव ने अपने दादाजी को सारी बात पहले ही बता दी थी।

दादा जी गौर से अमित और आकाश के गमलों को देखने लगे। "दादा जी! मैं इन्हे सुबह शाम खूब पानी देता हूँ। लेकिन इनमें फूल खिलते ही नहीं है।" अमित ने दादाजी से कहा।

"हुम्म्...." दादाजी ने हुंकार भरी। फिर बोले।

"अमित और आकाश बाबू ! तुम्हारे पौधे भूखे हैं। इन्हें भूख लगी है।"

नन्ही पिंकी भी यह सब देख रही थी। दादाजी की बात सुनकर बोली-"मैं अभी बिस्किट व चाकलेट लेकर आती हूँ।"

सभी खिलखिला कर हँस दिए।

अमित और आकाश मुस्करा कर रह गये। दोनों दादाजी की ओर ताक रहे थे।

दादा जी ने कहा-" अमित बाबू पानी से इनकी प्यास भले ही बुझ जाती हो, लेकिन भूख मिटाने के लिए इन्हें भी पौष्टिक तत्व चाहिए, जो शायद इस गमले की मिट्टी में नहीं है।"

"तो अब क्या करें? ऐसी मिट्टी कहाँ से लाएँ??"

आकाश ने चिंतित स्वर में पूछा।

"मिट्टी बदलने की जरूरत नहीं है। अभी इन्हें उर्वरक देकर देखते हैं।"

दादा जी ने उन्हें हिम्मत बंधाते हुए कहा।

दादा जी ने फोन पर किसी से बात की। और बोले" आधा घंटे में उर्वरक आ जावेंगे।"

नन्ही को यह नया शब्द मिल गया।

"दादा जी यह उबरबरक क्या होता है?" उसने दादाजी से पूछा।

"बिटिया यह रासायनिक पदार्थों से बना खाद का ही एक रूप है। जिसमें नाइट्रोजन, पोटाश, व पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्व होते हैं।" दादाजी ने कहा।

नन्हीं कुछ समझी कुछ नहीं समझी। लेकिन अमित आकाश अभिनव यह बात समझ चुके थे।

थोड़ी ही देर में अभिनव के चाचा विशाल और उनका मित्र उर्वरक लेकर आ गये।

अड़ोस-पड़ोस के कुछ बच्चे और इकठ्ठे हो गये।

निकिता दीदी भी अपने लॉन से यह सब सुन व समझ रही थी।

विशाल और उनके मित्र ने गमले की मिट्टी में दो-दो चम्मच उर्वरक मिलाया, उन्हे तुरन्त भरपूर पानी भी दिया।

फिर विशाल ने कहा "अमित बाबू अब आपके गमले में भी सप्ताह भर बाद फूल खिलने लगेंगे।"

आकाश का मुँह उतर गया।

विशाल चाचा समझ गये। उन्होंने हँसकर आकाश से कहा- "आकाश चिंता मत करो तुम्हारे पौधों में रंगीन फूल खिलेंगे।"

दादाजी को प्रणाम कर दोनों चले गये।

नन्हीं गाने लगी-

अब अपने घर जाओ भाई, सब अगले रविवार मिलेंगे।
भूख मिट गयी पौधों की- इनमें फूल हजार खिलेंगे।

नन्ही पिंकी की तुकबंदी सुनकर सभी के चेहरों पर मुस्कराहट फैल गयी। अमित और आकाश ने दादाजी को धन्यवाद देते हुए प्रणाम किया और अपने-अपने गमले लेकर नन्हीं का गीत दोहराते हुए अपने-अपने घर चल दिए।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - राजेन्द्र श्रीवास्तव

जन्म - कॉकर, तहसील- कुरबाई, जिला- विदिशा म.प्र.

शिक्षा - एम.एस.सी. (प्राणी शास्त्र) बी.एड.

निवास स्थान - श्री साँई सदन, आर.एम.पी. नगर, फेज-1
विदिशा, म.प्र. 464001

फोन नं. - 9753748806

मेल आई.डी. - rpshrivds78@gmail.com

प्रकाशन - मछली रानी (बाल कविता संग्रह)
मेरा मन बहलाये - गिलहरी (बाल कविता संग्रह)

सम्मान/पुरस्कार
1. साहित्य गौरव सम्मान 2014
2. स्वतंत्रता सेनानी स्व. ओंकारलाल शास्त्री, बाल कहानी पुरस्कार 2017
3. म.प्र. लेखक संघ भोपाल जिला इकाई - विदिशा द्वारा सम्मानित 2018
4. अंतरा शब्द शक्ति एवं भाषा सारथी सम्मान 2018
5. बाल साहित्य संस्थान उत्तराखण्ड अल्मोड़ा द्वारा बाल कहानीकार सम्मान 2018
6. कायस्थ रत्न सम्मान, विदिशा 2018
7. अंतरा शब्दशक्ति सम्मान 'हिन्दी कलमकार' 2019

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-67-3

मूल्य- 60/-